छठा अध्याय

पल्लव एवं शक मुद्राएँ

शकों का भारत में प्रवेश

प्राचीनकाल में चीन देश की उत्तर–पश्चिमी सीमा पर खानाबदोश (बनजारा) जातियाँ निवास करती थीं और जब कभी उन्हें अन्य जातियाँ पराजित करती थीं तो वे मध्य एशिया (तिब्बत के उत्तर में पठारी भाग जिसमें तरीम नदी बहती है) में विश्राम करते। कालान्तर में उस स्थान पर भी दूसरी जाति उत्तर–पश्चिम में आक्रमण करती, तो पुनः बल्ख होकर काबुल की घाटी में आ जाते थे। ईसा–पूर्व द्वितीय सदी में उत्तर–पश्चिमी चीन से यूईची जाति को भी अपदस्थ होना पड़ा और वह मध्य एशिया में चली आई; जहाँ शक नाम जाति निवास करती थी। उन्हें यूईची आक्रमण के कारण बल्ख होकर पार्थियन साम्राज्य में घुसना पड़ा। वे बल्ख के शासक शकों के अधीन हो गए तथा कालान्तर में उस जाति ने पार्थिया पर राज्य किया। पार्थिया का राजा मारा गया। किन्तु कालान्तर में पार्थिया के शासक द्वितीय मिथ्रदत (ई० पू० १२३–८८) की शक्ति बढ़ने के कारण शक जाति को पूर्व दिशा (भारत) की ओर मुड़ना पडा। काबुल के भाग में प्रवेश कर समीपवर्ती भूभाग के शासक बन गए जिसे साहित्य में सिस्तान (शकस्थान) कहते हैं। वे क्रमशः गान्धार, बिलुचिस्तान तथा निचली सिन्ध घाटी में फैल गए। भारतीय साहित्य में सिन्ध घाटी के निचले भाग को शकद्वीप कहने लगे, यहाँ के निवासी ब्राह्मण शाकद्वीपी कहे जाते हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि काबुल में यूनानी शासन था, इसलिए शक खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश न कर सके। भौगोलिक कठिनाइयों के कारण मध्य एशिया से कराकोरम एवं काश्मीर होकर भारत में आना सम्भव न हो सका। इस परिस्थिति में कपिन होकर सिस्तान तथा वहाँ से नीचे सिन्ध घाटी में शकों का राज्य हो गया। इस प्रक्रिया में शक जाति बिलुचिस्तान, सिन्ध तथा उत्तर–पश्चिम पंजाब पर अधिकार स्थापित करने में सफल हुई। इस क्षेत्र से भारतीय यूनानियों को निष्कासित कर दिया। शकों द्वारा प्रचलित सिक्कों के अध्ययन से प्रकट होता है कि उनकी मुद्राएँ यूनानी सिक्कों के अनुकरण पर तैयार की गई थीं। यूनानी अक्षरों का प्रयोग तथा उनके देवताओं को सिक्कों पर स्थान देना, उपर्युक्त कथन की पुष्टि करता है। उत्तर–पश्चिमी भारत में प्रचलित खरोष्ठी लिपि का प्रयोग राजनीतिक दृष्टि से आवश्यक ही था।

सिन्ध नदी के पूर्वी भाग में शासन करने वाली जाति शक नाम से प्रसिद्ध थी, किन्तु सिन्ध के पश्चिमी भाग के शासक पल्लव नाम से विख्यात हुए। दोनों (शक तथा पल्लव) जातियों का पारस्परिक सम्बन्ध अज्ञात है, किन्तु सिक्कों के अध्ययन से कुछ राजनैतिक सम्बन्ध ज्ञात होते हैं। पश्चिमी भाग का पल्लव राजा वानोनस था तथा पूर्वी प्रदेश में शक राजा मोअ के वंशज राज्य करते रहे। कुछ सिक्कों पर दोनों वंशों के शासकों के नाम उल्लिखित हैं (अग्रभाग एवं पृष्ठभाग पर) जिससे राजनीतिक परिस्थिति का परिचय मिलता है।

तक्षशिला की खुदाई से जो पुरातत्व सामग्री प्राप्त हुई है, उसके परीक्षण से प्रकट होता है कि मोअ (भोग) नामक शक शासक ने सर्वप्रथम राज्य किया जिसका उत्तराधिकारी अयस प्रथम माना गया है। सिक्कों के आधार पर अयस नामक दो पृथक् नरेशों की जानकारी मिलती है।

१. अयस प्रथम मोग का उत्तराधिकारी था। उसके बहुत से चाँदी तथा ताँबे के सिक्के मिले हैं।
२. खुदाई में अयस के कुछ सिक्के सतह के समीप से उपलब्ध हुए हैं। उन्हें अयस द्वितीय की मुद्रा मानते हैं।

Scanned with CamScanner

३. एक ताँबे का सिक्का उपलब्ध हुआ है जिसके अग्रभाग पर यूनानी अक्षरों में 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय अजाय' (अयस) लिखा है तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में "इन्द्रवर्म पुत्रस अस्पवर्मस स्त्रतगत जयतस" अंकित है। इससे प्रकट होता है कि अस्पवर्मा अयस का गवर्नर था। यही अस्पवर्मा गुदफर (गोन्डाफर्निस) के साथ भी शासन में सहायक रहा। इसलिए अस्पवर्मा के साथ शक नरेश अयस को द्वितीय अयस नहीं माना जा सकता है। अयस प्रथम तथा अयस द्वितीय के बीच की अवधि में अयलिस नामक शासक रहा। उसके अनेक सिक्के मिले हैं। सिक्कों के परीक्षण से ज्ञात होता है इस क्रम में मुद्रा-लेख विभिन्न लिपियों में अंकित हैं।

(१) 'अयस' यूनानी लिपि तथा 'अयलिस' खरोष्ठी लिपि।

(२) 'अयिलिस' यूनानी लिपि तथा 'अयस' खरोष्ठी लिपि।

अतएव यह स्पष्ट हो जाता है कि मोग का अयस प्रथम उत्तराधिकारी था। प्रथम अयस से अयिलिस ने तथा अयिलिस से द्वितीय अयस ने शासन-भार ग्रहण किया था।

शक राजा मोअ(मोग) के सिक्के

मोअ के शासनकाल के विषय में विद्वान एकमत नहीं हैं। किन्तु मुद्रा तथा अभिलेख के आधार पर मोग की तिथि निर्धारित की जा सकती है। मोग का नाम पटिक के तक्षशिला ताम्रपत्र लेख (७८ वर्ष = २१ ई०) में उल्लिखित है।

'महरयस महंतस मोगस पनेमस मसस दिवसे पंचमे'

(का० इ० इ० भा०२, पृ० २८)

इसकी भाषा प्राकृत तथा खरोष्ठी लिपि है जिससे इसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है। मुद्रा प्रचलन के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मोग ने यूनानी देवताओं को सिक्के पर स्थान दिया तथा अन्तिअलिकित के मुद्रा का अनुकरण किया था। इन दो प्रमाणों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि पुष्कलावती से सम्बन्धित यूनानी सिक्के मोग के लिए नमूने थे। उसका राज्य कपिसा-तक्षशिला के भूभाग पर स्थिर हो गया था। इसी ने यूनानी शासन का भारत में अन्त किया तथा शक के पश्चात् कुषाण शासन स्थापित हो गया।

मुद्रा तथा अभिलेखों के अनुशीलन से शक नरेशों की निम्न तिथियाँ निर्धारित की जाती हैं—

१. मोग—ई० स० २२।
२. अयस प्रथम—ई० स० ३० (स्पलरिसस का पुत्र)।
३. अयलिस—ई० स० ४०।
४. अयस द्वितीय—ई० स० ७०।

उपर्युक्त तिथियों से प्रकट होता है कि अयस मोग का पुत्र नहीं था। किन्तु वह पूर्वी ईरान में मोग का समकालीन शासक था जो तक्षशिला के भूभाग में शासन करने लगा। उसके वंशज, जिसका प्रसिद्ध शासक वोनोनस था, पूर्वी ईरान में शासन करता रहा। यह निष्कर्ष सिक्कों के अध्ययन से प्रमाणित हो जाता है। वोनोनस के सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी भाषा तथा लिपि में यूनानी नरेशों के सदृश उपाधि-सहित राजा का नाम है तथा पृष्ठभाग पर उसके सहकारी अधिकारी का नाम प्राकृत तथा खरोष्ठी लिपि में अंकित है। संक्षेप में, यह कहना उचित मालूम पड़ता है कि शक-पल्लववंशी राजा तक्षशिला तथा पूर्वी ईरान में स्वतंत्र रूप से शासन करते थे।

Scanned with CamScanner

मार्शल का अनुमान था कि मोग के पश्चात् तक्षशिला के भूभाग पर भारत–यूनानी नरेश हरमेयस का अधिकार हो गया था जो काबुल का राजा था। टार्न ने यह मत व्यक्त किया है कि मोग के बाद तक्षशिला पर हिपोस्ट्रेटस ने अधिकार स्थापित किया, अर्थात् यूनानियों ने शासन को पुनः स्थापित किया। परन्तु इस मत के समर्थन में अधिक प्रमाण नहीं मिलते हैं। यह सत्य है कि मोग के उत्तराधिकारी अयस ने हिपोस्ट्रेटस के सिक्कों का अनुकरण किया था तथा अथेना नामक यूनानी देवी की आकृति को सिक्के पर खुदवाया था। उसके पश्चात् अयलिस ने कपिसा से जो सिक्के प्रचलित किए, उन पर यूनानी भीम (ज़्यूस) की आकृति को स्थान दिया। इससे स्पष्ट होता है कि पल्लव जाति का तक्षशिला के भूभाग पर पूर्ण अधिकार हो गया था।

यूनानी लेखक जस्टिन ने उल्लेख किया है पार्थियन (पल्लव) लोगों ने यूनानी शासन का अंत कर दिया था। ऊपर इस बात का उल्लेख किया गया है कि अयस के पश्चात् अयिलिस ने शासन किया तथा उसके बाद अयस (द्वितीय) ने। तक्षशिला के भूभाग से उपलब्ध दो लेखों में अयस का नामोल्लेख है। कलवान ताम्रपत्र (तिथि १३४ = ७७ ई०) तथा तक्षशिला रजत पट्ट के लेख में (तिथि १३६ = ७९ ई०) अयस का उल्लेख है (ए० इ० भा० २१, पृ० २५९ तथा वही भा० १४, पृ० २९५)। अतएव शक नरेशों का शासन तक्षशिला पर स्थित रहा। पल्लव राजाओं का राज्य पूर्वी ईरान तथा पश्चिमी पंजाब एवं उत्तर–पश्चिम सीमान्त प्रदेश में सीमित रहा।

सिक्कों का प्रकार

शक राजा मोग ने चाँदी तथा ताँबे के सिक्के प्रचलित किए जो यूनानी सिक्कों का अनुकरण था। अग्रभाग पर यूनानी उपाधि, भाषा एवं लिपि का प्रयोग दिखाई देता है तथा तक्षशिला के भूभाग में प्रचलित प्राकृत भाषा तथा खरोष्ठी लिपि का प्रयोग सदा पृष्ठभाग पर किया गया। सिक्कों का आकार गोल तथा वर्गाकार भी है, परन्तु ताँबे के सिक्के अधिकतर वर्गाकार हैं। कुछ सिक्कों पर राजा घोड़े पर सवार है। हाथी तथा वृषभ (भारतीय पशु) को भी स्थान दिया गया है।

अग्रभाग—यूनानी भाषा एवं लिपि में यूनानी लेख 'वैसिलियस वैलिलियान मेगा लाय मेयाय'।

पृष्ठभाग—प्राकृत भाषा में 'खरोष्ठी राजातिराजस महतस मोअ'।

अग्रभाग पर यूनानी देवी–देवता की आकृतियाँ मिली हैं। सिंहासन पर बैठा ज़्यूस (भारतीय भीम) अपोलो तथा पोसेडान की आकृति अंकित है। पंखयुक्त अर्तेमिस भी दीख पड़ती है। पृष्ठभाग पर पंखसहित नाइके शहर की देवी (city goddess) का चित्र अंकित है। मोअ ने ताँबे का वर्गाकार सिक्का अधिक संख्या में प्रचलित किया जिस पर भारतीय छाप है। राजा घोड़े पर सवार है। हाथी का चित्र तथा अंकुश, वृषभ, घोड़ा, मुद्गल, तिरपाई आदि भारतीय चिह्न भी अंकित हैं। मुद्रा–लेख में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता है। इससे प्रकट होता है कि मोअ ने पुष्कलावती क्षेत्र में शासन किया। यूनानी सिक्कों का अनुकरण करते हुए भी भारतीय प्रभाव से वंचित न रह सका।

अयस के सिक्के

मोग के उत्तराधिकारी अयस के अनगिनत सिक्के उपलब्ध हुए हैं जिनमें अधिकतर चाँदी की गोलाकार मुद्राएँ हैं। उनके सिक्कों को दो उपभागों में बांटा जा सकता है।

१. गोलाकार चाँदी के सिक्के—ये सिक्के अयस ने पूर्वी ईरान में शासन करते हुए प्रचलित किए थे। इन सिक्कों के अग्रभाग पर घोड़े पर सवार राजा की मूर्ति है। उस ओर यूनानी भाषा एवं लिपि में 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालय अजाय' अंकित है। यही उपाधि मोग के सिक्कों पर भी थी। किन्तु पृष्ठभाग पर ईरानी लम्बी उपाधि सहित नाम खरोष्ठी लिपि में अंकित है।

Scanned with CamScanner

"महरजस रजरजस महतस अयस"।

२. दूसरी श्रेणी में ताँबे के सिक्के लिए जा सकते हैं जिन्हें सम्भवत: तक्षशिला के क्षेत्र में प्रचलित किया गया था।

ताँबे के सिक्कों पर भी अग्रभाग में यूनानी लेख तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में मुद्रा–लेख अंकित हैं। इस श्रेणी के सिक्कों पर लक्ष्मी की आकृति, दो सिंह या हाथी तथा यूनानी देवता पोसेडान, हेरैक्लिज़ आदि को अग्रभाग पर स्थान दिया गया है। पृष्ठभाग पर वृषभ का चित्र अधि क दिखाई देता है। यों दिमित्र, हेरैक्लिज़ भी यदा–कदा अंकित मिले हैं। इस प्रकार अयस की राज्य सीमा का अनुमान लगाया जा सकता है।

अग्रभाग—यूनानी भाषा एवं लिपि मुद्रा–लेख—'वैसिलियस वैसिलियान मेगालय अजाय' उपर्युक्त विविध आकृतियां हैं। अधिकतर राजा घोड़े पर सवार है।

पृष्ठभाग—प्राकृत एवं खरोष्ठी लिपि में 'महरजस रजरजस महतस अयस' कभी यूनानी देवता या भारतीय चिह्न हैं।

इस शासक का चाँदी का गोलाकार एक सिक्का मिला है जिसके मुद्राओं पर—

अग्रभाग पर यूनानी भाषा में लेख 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय अजाय' तथा राजा घोड़े पर सवार है।

पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में ईरानी उपाधि 'महरजस रजरजस महतस अयिलिसस' अंकित है। देवी की खड़ी आकृति है।

इससे प्रकट होता है कि अयिलिस अयस का उत्तराधिकारी था। दूसरे सिक्के पर मुद्रा–लेख विपरीत ढंग से लिखा है। यूनानी मुद्रा–लेख (अग्रभाग पर) में अयिलिस का नाम तथा खरोष्ठी लिपि में (अयस द्वितीय) का नाम अंकित है। इस आधार पर अयस की दो स्थिति प्रकट होती हैं।

अग्रभाग—राजा घोड़े पर सवार है या हैरेक्लिज़ की मूर्ति है। लेख यूनानी लिपि में 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय अजिलिसाय' है।

पृष्ठभाग—पैलेस नामक यूनानी देवी, खरोष्ठी लिपि में 'महरजस रजरजस महतस अयस' है।

अयिलिस की मुद्रा

इस प्रकार के सिक्के अल्पसंख्या में उपलब्ध हुए हैं। अयिलिस ने चाँदी के गोलाकार तथा ताँबे के वर्गाकार सिक्के प्रचलित किए हैं। उनके परीक्षण से प्रकट होता है कि अयस की तरह अयिलिस ने भी पुष्कलावती के भूभाग में प्रचलित यूनानी सिक्कों का अनुकरण किया था। यूनानी देवी–देवता तथा भारतीय चिह्न उसके सिक्कों पर खुदे हैं। राजा घोड़े पर सवार है या उसी अग्रभाग पर ज़्यूस (भीम) की आकृति है। पृष्ठभाग पर घोड़े पर डियोसकूरी की आकृति, पैलेस या ताड़पत्र युक्त देवी की प्रतिमा खुदी है। यूनानी लेख में वही लम्बी उपधि 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय अजिलिसाय' है तथा खरोष्ठी लिपि लेख में कोई भेद नहीं है अर्थात् 'महरजस रजरजस महतस अयिलिसस'। ताँबे की वर्गाकार मुद्राओं पर भारतीय चिह्न—घोड़ा, हाथी, वृषभ, सिंह आदि हैं। मुद्रा–लेख चाँदी के सिक्कों के सदृश हैं।

वोनोनस एवं अन्य राजाओं के सिक्के

पिछले पृष्ठों में यह कहा गया है कि अयिलिस के पूर्व अयस शासन करता रहा। वह सम्भवत:

Scanned with CamScanner

मोग का समकालीन राजा था जिसकी स्थिति पूर्वी ईरान में स्थापित हो चुकी थी। उसी से सम्बन्धित कई राजा थे जिनके चाँदी के सिक्के मिलते हैं। एक सिक्के के अग्रभाग पर वैसिलियस मेगालय स्पलिरिसाय' खुदा है। राजा घोड़े पर सवार है।

पृष्ठभाग—खरोष्ठी लिपि में 'महरजस महतस अयस', ज़्यूस की आकृति खुदी है।

इससे प्रकट होता है कि स्पलरिस तथा अयस संयुक्त शासक थे। अयस तक्षशिला का शासक तथा मोग का उत्तराधिकारी बतलाया गया है। अतः सिक्कों के अनुशीलन से प्रकट होता है कि अयस के पश्चिमी राज्य सीमा पर अन्य शासक राज्य करते थे जिनके सिक्के उपलब्ध हुए हैं।

अयस के साथ शासन करने वाले स्पलरिस के चाँदी के गोलाकार सिक्के मिले हैं जिन पर उस राजा को भ्राता कहा गया है अर्थात् कोई अन्य व्यक्ति वास्तविक शासक था।

अग्रभाग—घोड़े पर सवार राजा, यूनानी मुद्रा-लेख 'स्पलिरिसाय'।

पृष्ठभाग—खरोष्ठी लिपि में महरज भ्रत धमियस स्पलिरिसस', ज़्यूस की आकृति है।

इसी प्रकार का खरोष्ठी लिपि में लेख तथा ज़्यूस की आकृति अन्य चाँदी के सिक्कों पर खुदी है जिसके अग्रभाग पर यूनानी अक्षरों में 'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय ओनोनाय' (वोनोनस) अंकित है। पृष्ठभाग पर 'महरज भ्रत धमिकस स्पलहोर' खुदा है। सम्भवतः स्पलहोर तथा स्पलिरिस दोनों एक ही व्यक्ति थे। यूनानी लेख में अंकित वोनोनस वास्तविक शासक था जिसके भ्राता स्पलिरिस तथा स्पलहोर सहायक शासक के रूप में कार्य करते रहे। उसी स्पलहोर का पुत्र स्पलगदम था। स्पलहोर पुत्रस धमिकस स्पलगदम भी वोनोनस का सहायक रहा। उसके ताँबे के वर्गाकार सिक्के मिले हैं। इस प्रकार अयस के पश्चिमी राज्य सीमा पर अन्य शक नरेशों ने शासन किया तथा सिक्के प्रचलित किए। शक राजा अयस (द्वितीय) को हटाकर पल्लव (पार्थियन) ने उत्तर-पश्चिम भारत पर शासन किया और मुद्राएँ प्रचलित कीं।

पल्लव मुद्राएँ

उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात हो जाता है कि शक जाति ने उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेश तथा पश्चिमी पंजाब से यूनानी शासन का अंत कर दिया था। यही कारण है कि उनके सिक्के यूनानी अनुकरण पर तैयार किए गए। काबुल में केवल हरमेयस शासन करता रहा। अन्य जगहों पर यूनानी जाति का निवास मात्र शेष था। शक लोगों का अन्त कैसे हुआ, यह कहना कठिन है। अयस द्वितीय के सिक्के हीनावस्था के प्रकट होते हैं। शायद उस समय पल्लव लोगों ने सिन्ध की निचली घाटी से भारत में प्रवेश किया और तक्षशिला को जीत लिया। पल्लव नरेश गुदफर के सिक्के के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अयस द्वितीय के पश्चात् गुदफर (गोंडाफरनिस) उत्तर-पश्चिम भारत का स्वामी बन गया था।

अयस का एक ताँबे का वर्गाकार सिक्का मिला है जिसके मुद्रा-लेख निम्न प्रकार हैं। अग्रभाग—'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय अजाय'। राजा घोड़े पर सवार है।

पृष्ठभाग—खरोष्ठी लिपि में 'इन्द्रवर्म पुत्रस अस्पवर्मस स्त्रतगस जयतस' खुदा है। पैलेस की आकृति है।

गुदफर के सिक्के

अस्पवर्मा अयस के अधीन शासन करता रहा। गोंडाफरनिस का मिश्रित धातु का एक सिक्का उसी भाग से उपलब्ध हुआ है जिसके अग्रभाग पर राजा घोड़े पर सवार है। यूनानी लेख स्पष्ट हैं।

Scanned with CamScanner

पृष्ठभाग पर ज़्यूस (भीम) की खड़ी आकृति तथा खरोष्ठी लिपि में "जयतस त्रतरस इन्द्रवर्म पुत्रस स्त्रतेगस अस्पवर्मस" खुदा है। इससे प्रमाणित हो जाता है कि अस्पवर्म नामक व्यक्ति पहले अयस (द्वितीय) के अधीन था, किन्तु गोंडाफरनिस के विजयी होने पर पल्लव नरेश (गुदफर) की अधीनता स्वीकार कर ली अर्थात् गोंडाफरनिस जो पूर्वी ईरान का शासक था, सीस्तान होते सिन्ध से दक्षिण-पश्चिमी पंजाब एवं उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश का स्वामी बन बैठा। पूर्वी ईरान में गुदफर आर्थेगनस राजा के अधीन था जिसके साथ सिक्का भी चलाया, किन्तु वहीं से सिन्ध की निचली घाटी होते हुए शक जाति को अपदस्थ कर दिया। उत्तर-पश्चिम भारत में गोंडाफरनिस के विजयी होने के प्रमाण में पेशावर से प्राप्त तख्तबहाई लेख उपस्थित किया जाता है जो अस्पवर्मा के सिक्के की पुष्टि करता है। अभिलेख की तिथि १०३ (= ४५ ई०) है और पल्लव राजा छब्बीस वर्ष तक शासन करता रहा। अर्थात् ई० स० १९ में सिंहासन पर बैठा होगा। लेख प्राकृत में निम्न प्रकार है—

महरयस गुदुब्हरस वर्ष २० + ४ + १ + १ (ए० इ० भा० १८, पृ० २८२)।

गुदफर का राज्य विस्तृत था और पल्लव (पार्थियन) शैली पर सामन्त की सहायता से शासन करता रहा। गोंडाफरनिस (गुदफर) के सिक्के उत्तर-पश्चिमी भारत तथा काबुल की घाटी से भी उपलब्ध हुए हैं। वेग्राम की खुदाई से गुदफर के अतिरिक्त उसके उत्तराधिकारी के सिक्के नहीं मिले हैं। सम्भवतः गुदफर के बाद काबुल घाटी कुषाण के अधिकार में रही।

पल्लव राजा गोंडाफरनिस के विषय में ईसाई जनश्रुति से भी प्रकाश पड़ता है कि सेंट थॉमस द्वारा वह ईसाई मत में दीक्षित कर लिया गया। इस राजा के अधिकतर सिक्के मिश्रित धातु (बुलियन) के उपलब्ध हुए हैं। कुछ ताँबे की भी मुद्राएँ प्रकाश में आई हैं। गुदफर ने अयस की शैली पर सिक्के प्रचलित किए।

अग्रभाग—घोड़े पर सवार राजा की मूर्ति, यूनानी भाषा में लेख—'वैसिलियस वैसिलियान मेगालाय यनडोफोराय' खुदा है।

पृष्ठभाग—ज़्यूस की खड़ी आकृति—पैलेस या नाइके की मूर्ति, मुद्रा-लेख खरोष्ठी लिपि में 'महरज रजरज महत धमिअ देवव्रत गुदफरस' खुदा है।

सम्भवतः गोंडाफरनिस के शासनकाल में पश्चिमी भाग से चाँदी का आयात रुक गया था। अतएव चाँदी के सिक्कों का अभाव रहा। ईरान तथा काबुल के भूभाग में कुषाण जाति का आधिपत्य हो गया था जिन्होंने पल्लव के पश्चात् भारत में शासन आरंभ किया। गुदफर के भ्राता का पुत्र अबदगम भी चाँदी का सिक्का प्रचलित न कर सका। गुदफर की नकल पर अन्य छोटे-छोटे पल्लव नरेशों ने भी सिक्के के लिए ताँबे का ही प्रयोग किया था।

सोटर मेगस

गोंडाफरनिस के पश्चात् अनेक शासक उत्तर-पश्चिम भारत में राज्य करते रहे जिनके सिक्के भारतीय पल्लव शैली के मिले हैं। उनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं है। केवल उनके नाम आथेंगनस, पकोरस, जियानिसस आदि मुद्रा-लेख से प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु सोटर मेगस के सिक्के पेशावर से मथुरा तक उपलब्ध हुए हैं। उसका वास्तविक नाम अज्ञात है किन्तु वह 'महरज रजरज महतस त्रतरस' कहा गया है। सोटर मेगस के सिक्के अधिक मात्रा तथा विस्तृत भूभाग से मिले हैं, इस कारण से वह प्रतापी शक्तिशाली राजा प्रतीत होता है। इसके सिक्के केवल ताँबे के उपलब्ध हुए हैं। इसलिए धातु तथा वर्गाकार के अभाव में यह कहा जा सकता है कि वह कुषाण राजा का समकालीन शासक था। यह आश्चर्य है कि ऐसे महान् शासक की स्थिति के विषय में हमारी

Scanned with CamScanner

जानकारी सीमित है। केवल सिक्कों से विदित होता है कि वह प्रतापी राजा था। सोटर मेगस के सिक्के तीन श्रेणियों में विभाजित किए जाते हैं—

(१) यूनानी लेख सहित (२) खरोष्ठी लिपि यूनानी मुद्रा–लेख (३) मुद्रा–लेख रहित।

कनिंघम ने इस नामरहित शासक को कुषाणवंश से सम्बन्धित किया है। इससे अधिक कुछ कहा नहीं जा सकता।

Scanned with CamScanner